# ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
# जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
# डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
# पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

**बुलेटिन संख्या–९८**
**दिनांक– शुक्रवार, ३० दिसम्बर, २०२२**

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 18.6 एवं 6.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 70 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.3 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.1 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.3 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 10.7 एवं दोपहर में 20.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
## (31 दिसम्बर, 2022–04 जनवरी, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 31 दिसम्बर, 2022–04 जनवरी, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- अगले दो दिन तक तापमान में विशेष बदलाव की सम्भावना नहीं है जिसके चलते अधिकतम तापमान 19 से 21 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 6 से 8 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। अगले दो दिनों के बाद अधिकतम तापमान एवं न्यूनतम तापमान में हल्की वृद्धि होने की सम्भावना है। सुबह में मध्यम कुहासा छा सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 04–06 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले २ दिनों तक पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

## • समसामयिक सुझाव

- वर्त्तमान मौसम, आलू के फसल की पिछेता झुलसा बीमारी के लिए बेहद अनुकूल है., इस परिस्थिति में सभी आलू किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि जिन किसान भाईयो की आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, वे मेन्कोजेब या प्रोपीनेब या क्लोरोथेलोंनील युक्त फफूंदनाशक दवा का 0.2-0.25 प्रतिशत की दर से अर्थात 2.0-2.5 किग्रा दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टयेर छिड़काव तुरंत करें। जिन खेतों में बीमारी आ चुकी उनमें किसी भी सिस्टमिक फफूंदनाशक – साईमोक्सानिल + मेन्कोजेब या फेनोमिडोन + मेन्कोजेब या डाईमोथोमार्फ + मेन्कोजेब का 0.3 प्रतिशत (3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टयेर 1000 लीटर पानी में) की दर से छिड़काव करें।
- वर्त्तमान मौसम में गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून एवं अन्य रबी फसलो में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर 2.5 ग्राम डाई–इथेन एम0 45 फफूँदनाषक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर 2–3 छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर करें।
- गेहूँ की 30 से 35 दिनों (पहली सिंचाई के बाद) की अवस्था जिसमें कई प्रकार के खर–पतवार गेंहूँ में उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को अत्यधिक प्रभावित करती है। जिससे उपज में कमी आती है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के रोकथाम हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्रम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हों गयी हो 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- पिछात मटर में निकाई–गुराई करें। फसल में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूारान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता से करें। पॉक्ति से पॉक्ति की दुरी 15 से0मी0 तथा पौध से पौध की दुरी 10 से0मी0 पर करे। पौध की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। अगात रोपी गई प्याज में निकौनी करे। लहसुन की फसल में निकौनी एवं कीट–व्याधि की निगरानी करें।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। अगात बोयी गयी मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- तापमान में गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः 20.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.6 डिग्री सेल्सियस कम | आज का न्यूनतम तापमानः 6.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.6 डिग्री सेल्सियस कम |

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)